॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

614

संध्या

614

ॐ

॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

संध्या

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

गीताप्रेस, गोरखपुर

सं० २०७३ सत्तरवाँ पुनर्मुद्रण १०,०००
कुल मुद्रण १२,९०,०००

❖ मूल्य—₹ ३
(तीन रुपये)

प्रकाशक एवं मुद्रक—
गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५
(गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान)
फोन : (०५५१) २३३४७२१, २३३१२५०; फैक्स : (०५५१) २३३६९९७
web: **gitapress.org** e-mail : **booksales@gitapress.org**
गीताप्रेस प्रकाशन gitapressbookshop. in से online खरीदें।

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथ संध्या

प्रातःकाल और मध्याह्न-संध्याके समय पूर्वकी ओर तथा सायंकालकी संध्याके समय पश्चिमकी ओर मुख करके शुद्ध आसनपर बैठ तिलक करें।

नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर शरीरपर जल छिड़कें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

दाहिने हाथमें जल लेकर यह संकल्प पढ़ें; संवत्सर, मास, तिथि, वार, गोत्र तथा अपना नाम उच्चारण करें। ब्राह्मण हो तो 'शर्मा', क्षत्रिय हो तो 'वर्मा' और वैश्य हो तो नामके आगे 'गुप्त' शब्द जोड़कर बोलें।

ॐ तत्सदद्यैतस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे कलियुगे कलिप्रथमचरणे

अमुकसंवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहं ममोपात्तदुरितक्षयपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रातः [मध्याह्न अथवा सायं]-संध्योपासनं कर्म करिष्ये॥

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ें।

पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः॥

नीचे लिखे मन्त्रको पढ़कर आसनपर जलके छींटे दें।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

फिर बायें हाथमें बहुत-सी कुशा लेकर और दाहिने हाथमें तीन कुशा लेकर पवित्री धारण करें, इसके बाद 'ॐ' के साथ गायत्री-मन्त्र पढ़कर चोटी बाँध लें और ईशान दिशाकी ओर मुख करके आचमन करें।

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ दें।

ऋतं चेति त्र्यृचस्य माधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तं दैवतमपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥

नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर पुनः आचमन करें।

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥

तदनन्तर 'ॐ' के साथ गायत्री-मन्त्र पढ़कर रक्षाके लिये अपने चारों ओर जल छिड़कें।

नीचे लिखे एक-एक विनियोगको पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ते जाएँ अर्थात् चारों विनियोगोंके लिये चार बार जल छोड़ें।

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः ॥ सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्नि-भरद्वाजगौतमात्रिवसिष्ठकश्यपा ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती-

पङ्क्तित्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांस्यग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविश्वेदेवा देवता अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः ॥ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवताग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः ॥ शिरसः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिपदा गायत्री छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवता यजुः प्राणायामे विनियोगः ॥

फिर आँखें बंद करके नीचे लिखे मन्त्रसे तीन बार प्राणायाम करें। पहले अंगूठेसे दाहिना नथुना बंदकर बायें नथुनेसे वायुको अंदर खींचें और ऐसा करते हुए नाभिदेशमें नीलकमलदलके समान नीलवर्ण चतुर्भुज भगवान् विष्णुका ध्यान करें, यह पूरक प्राणायाम है। इसके बाद अंगूठे और अनामिकासे दोनों नथुने बंद करके वायुको अंदर रोक ले। यों करता हुआ हृदयमें कमलके आसनपर विराजमान, रक्तवर्ण चतुर्मुख ब्रह्माका ध्यान करे, यह कुम्भक प्राणायाम है। अनन्तर अंगूठा हटाकर दाहिने नथुनेसे वायुको धीरे-धीरे बाहर निकाल दें। इस समय त्रिनेत्रधारी शुद्ध श्वेतवर्ण शंकरका ललाटमें ध्यान करे, यह रेचक प्राणायाम है।

नीचे लिखे मन्त्रका तीनों ही प्राणायामके समय तीन-तीन बार या एक-एक बार जप करनेका अभ्यास करना चाहिये।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

(प्रातःकालका विनियोग और मन्त्र)

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ दें।

सूर्यश्च मेति ब्रह्मा ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः॥

नीचे लिखे मन्त्रको पढ़कर आचमन करें।

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

(मध्याह्नका विनियोग और मन्त्र)

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ दें।

आपः पुनन्त्विति विष्णुर्ऋषिरनुष्टुप्छन्द आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥

नीचे लिखे मन्त्रको पढ़कर आचमन करें।

ॐ आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहँ्स्वाहा॥

(सायंकालका विनियोग और मन्त्र)

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ दें।

अग्निश्च मेति रुद्र ऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥

नीचे लिखे मन्त्रको पढ़कर आचमन करें।

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृ तेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु। यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ दें।

आपो हि ष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्द आपो देवता मार्जने विनियोगः॥

इसके उपरान्त नीचेके मन्त्रोंद्वारा तीन कुशोंसे मार्जन करें, कुशोंके अभावमें तीन अंगुलियोंसे करें, सात पदोंसे सिरपर जल छोड़ें। आठवेंसे भूमिपर और नवें पदसे फिर सिरपर मार्जन करें।

ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवः। ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ॐ महे रणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसः। ॐ तस्य भाजयतेह नः।

ॐ उशतीरिव मातरः। ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ॐ आपो जनयथा च नः।

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ दें।

द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्द आपो देवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः॥

दाहिने हाथमें जल लेकर नीचे लिखे मन्त्रको तीन बार पढ़ें, फिर उस जलको सिरपर छिड़क दें।

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः॥

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ दें।

अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधावभृथे विनियोगः॥

दाहिने हाथमें जल लेकर उसे नाकसे लगाकर श्वास आते या जाते समय एक

बार या तीन बार नीचे लिखे मन्त्रको पढ़कर जल पृथ्वीपर छोड़ दें।

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ दें।

अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्द आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः॥

इस मन्त्रको पढ़कर आचमन कर लें।

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्॥

फिर सूर्यके सामने एक चरणकी एड़ी (पिछला भाग) उठाये हुए या एक चरणसे खड़े होकर ओंकार और व्याहृतियोंके सहित गायत्री-मन्त्रको तीन बार जप

करके पुष्प मिले हुए जलसे सूर्यको तीन अंजलि दें।

नीचे लिखे चारों विनियोगोंको एक-एक पढ़कर चार बार जल पृथ्वीपर छोड़ दें।

ॐ उद्वयमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः॥ उदुत्यमिति प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः॥ चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः॥ तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुरउष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः॥

नीचे लिखे मन्त्रोंको पढ़कर सूर्यका उपस्थान करे। उपस्थानके समय प्रातःकाल और सायंकाल अंजलि बाँधकर और मध्याह्नमें दोनों बाहोंको ऊपर उठाकर खड़े रहें।

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥ ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षँ्सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥ ॐ

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ्शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥

इसके बाद बैठकर या खड़े-खड़े ही अंगन्यास करें।

एक-एकको पढ़ता जाय और जिस न्यासमें जिस अंगका नाम हो उस अंगपर हाथ लगाते जाएँ तथा अन्तिमसे एक ताली बजाकर चारों ओर चुटकियाँ बजा दें। यों तीन बार करें।

ॐ हृदयाय नमः। ॐ भूः शिरसे स्वाहा। ॐ भुवः शिखायै वषट्। ॐ स्वः कवचाय हुम्। ॐ भूर्भुवः नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्॥

नीचे लिखे तीनों विनियोगोंको एक-एक पढ़कर पृथ्वीपर तीन बार जल छोड़ दें।

ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णो जपे विनियोगः। त्रिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि-

वाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः। गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः॥

नीचे लिखे मन्त्रको पढ़कर इसके अनुसार गायत्रीदेवीका ध्यान करें।

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भूषिता॥
आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताथवा।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा॥

नीचे लिखा विनियोग पढ़कर पृथ्वीपर जल छोड़ दें।

तेजोऽसीति देवा ऋषयो गायत्री छन्दः शुक्रं दैवतं गायत्र्यावाहने विनियोगः॥

नीचे लिखे मन्त्रोंसे विनयपूर्वक गायत्रीदेवीका आवाहन करें।

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि। धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि। न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत्॥

फिर गायत्रीके कम-से-कम १०८ मन्त्रोंका जप करें, प्रातःकाल और मध्याह्नके समय सूर्यके सामने खड़े होकर और सायंकाल पश्चिमकी ओर मुख करके बैठकर जप करना चाहिये।

गायत्री-मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ॥

नीचे लिखे मन्त्रको पढ़ते हुए प्रदक्षिणा करें।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

॥इति संध्या॥

हरिः ॐ तत्सत्। हरिः ॐ तत्सत्। हरिः ॐ तत्सत्।

अथ संध्याकालनिर्णयः

उत्तमा तारकोपेता मध्यमा लुप्ततारका।
कनिष्ठा सूर्यसहिता प्रातःसंध्या त्रिधा स्मृता॥ १ ॥

मध्या मध्याह्ने॥ २ ॥

उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमा लुप्तभास्करा।
कनिष्ठा तारकोपेता सायंसंध्या त्रिधा स्मृता॥ ३ ॥

इति संध्याकालनिर्णयः।

हरिः ॐ तत्सत्। हरिः ॐ तत्सत्। हरिः ॐ तत्सत्।

Code 614